इमामे सज्जाद (अ०) की समाजी शख़सियत

मौलाना सै0 एहसान हैदर रिज़वी साहब

हालात व इक़्दामात

तारीख़े इस्लाम की क़यादत में इमाम सज्जाद अलैहिस्सलाम के किरदार के ज़िक्र से पहले ज़रूरी है कि यह बात फिर से दुहरा दी जाए कि अइम्म–ए–अहलेबैत (अ0) में से हर इमाम अपने ज़माने की इस्लामी उम्मत की इन्फ़ेरादी, समाजी, फ़िक्री और सियासी क़यादत के लिये इन ख़ुतूत को तय करता है जिन पर इस्लामी उम्मत की इस्लाह व कामियाबी पूरी तरह मुमकिन हो, क्योंकि इमाम के लिये मुमकिन नहीं है कि वह उम्मतसे बे ताल्लुक़ और उनके समाजी हालात से नज़र चुराए, बल्कि वह हमेशा अपने ज़माने के हालात पर नज़र रखते हुए उम्मत के लिये सियासी और ग़ैर सियासी तरीक़े को चुनता है। और यही वजह है कि हम इमामों के इक़्दामात में इख़्तेलाफ पाते हैं और उनकी इस्लाही हिक्मत में फ़र्क़ नज़र आता है कि हर इमाम अपना ख़ास रास्ता, नज़रिया और तरीक़ा इस्तेमाल करता है बल्कि एक ही इमाम अपनी ज़िन्दगी के कई हिस्सों में इस्लामी उम्मत के बदलते हुए समाजी और सियासी हालात को देखते हुए कई तरीक़े और रास्ते चुनता है। जैसा कि हमें अली बिन अबी तालिब (अ0) और आपके बेटे हसन (अ0) व हुसैन (अ0) और उनके बाद इमाम अली बिन हुसैन (अ0) की ज़िन्दगियों में नज़र आता है जिनको अब हम बयान करेंगे।

इमाम अली बिन अबी तालिब (अ0) अपनी इस्लाही क़यादत के ज़माने में तीन दौरों से गुज़रे। आपका पहला दौर रसूल (स0) की ज़िन्दगी में गुज़रा जब आप एक ऊँचे दर्जे के मानने वाले और फरमाबरदार सिपाही की हैसियत से कभी मैदाने जंग में जाते और कभी पैग़ाम पहुँचाने के दूसरे फ़र्ज़ अन्जाम दे रहे थे।

आपका दूसरा दौर उन तीन ख़लीफाओं के ज़माने में जो तारीख़ी एतेबार से उम्मत के ख़ुद से सरदार बन गये थे। उस ज़माने में आप (अ0) की सारी कोशिश हक़ीक़ी इस्लाम की हिफाज़त, इस्लामी सियासत को फैलाने और उम्मत के इज्तेमाई रास्तों को बनाने में ख़र्च हो रही थी। इसलिए इसी ज़माने में आपने क़ुर्आन करीम इकटठा किया, हुक्काम को रास्ता दिखाया, हद से आगे जाने वालों को समझाया और फिर जाने वालों को नसीहत और हक़ व हक़ीक़त की हिदायत फरमाई।

लेकिन जैसे ही इस्लामी उम्मत की क़यादत आपके हाथों में आई अब आपकी सारी पालीसियाँ बिलकुल बदल गईं और आपने उम्मत की क़यादत का नया रास्ता ईजाद किया और वह सारी बुरी और ख़राब बातें जो हुकमरानों ने इस्लाम में पैदा कर दी थीं उन सबको आपने बिलकुल बातिल कर दिया। और इस्लाम की हक़ीक़ी ज़रूरतों के हिसाब से और इस्लामी उम्मत के हक़ीक़ी सुधार को देखते हुए अपने सारे हुकूमती और कारोबारी प्रोग्राम नई तरह से तरतीब दिये।

इमाम अली (अ0) की तरह बड़े नवासे इमाम हसन (अ0) ने भी अपने अब्बा जान के ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस ज़माने की पालीसियों को अपने ज़माने के हालात के एतेबार से बदला और उस वक़्त जब आपने बनी उमैय्या के गिरोह को मज़बूत पाया और उनके इक़दामों में हद से आगे बढ़ जाने का जायज़ा लिया तो आपने भी शुरु में अपनी पालीसी बदल दी लेकिन बाद के मौक़ों में हालात के एतेबार से आपने अपना पहला तरीक़ा भी बदला (वसीक़तुलहुदना के बाद....)

यहीं से हम देखते हैं कि हर इमाम अवाम और आम हालात को सुधारने के लिये अपना किरदार अदा करता है। और इसी से इस बात का अन्दाज़ा होता है कि इमाम सज्जाद (अ0) ने इस्लामी उम्मत की रफ्तार को सिर्फ इसलिए नहीं मोड़ा था कि उन्हें उम्मत की क़यादत के लिए जो कुछ भी कर गुज़रना पड़ता वह उन्होंने किया। बल्कि आप ने मौजूदा हालात में मुस्लिम उम्मत के लिये सही और सबसे अच्छा इस्लामी व इस्लाही रास्ता चुना जिसकी बुनियाद इस्लामी अहकाम पर पड़ी थीं।

यहाँ इस बात को भी बढ़ा दिया जाए कि जिन लोगों ने अइम्मा अलैहिमुस्सलाम की इन बड़ी फिक्री ख़ूबियों की बिना पर तय किये हुए रास्तों से हालात व वाक़ेआत की वजह से इस्लाह क़बूल न की बल्कि उनसे अलग रहे उनमें ज़्यादातर ने खुली हुई ग़लती की (और इमाम की इस बड़ी फिक्र को न समझ सके) यहाँ तक वह इमाम हसन (अ0) से भी इमाम हुसैन (अ0) की तरह जंग का सवाल करते हैं, और इमाम हुसैन (अ0) से इसके उलट सुलह का सवाल करते हैं।

अइम्म–ए–मासूमीन (अ0) की सीरत में बेशुमार ऐसी दलीलें मौजूद हैं जो इन बातों को साफ करती हैं कि इस्लमी उम्मत की इस्लाही क़यादत में, उनके काम के तरीक़ों में इख़्तेलाफ की क्या वजहें थीं, (और किन हालात ने उनके इक़दामात में फर्क़ पैदा किया) इमाम हसन (अ0) ने भी बार–बार इस बात को साफ किया है कि इन हालात में मुआविया से सुल्ह करना ही सही इस्लामी रास्ता और तरीक़ा था और इसके अलावा कोई भी दूसरा तरीक़ा समझ में आने वाला नहीं था। जैसा कि आपने फरमाया ''ऐ अबु सईद! मुआविया से मेरी सुलह की बिलकुल वही वजह है जो रसूल (स0) का बनी जुमरा और बनी अश्जअ् से सुलह की वजह थी और बिलकुल वही वजह थी जो रसूल (स0) का मक्के वालों से हुदैबिया से पलटने के मौक़े पर सुल्ह की वजह थी'' और जैसा कि आपने बशीर हमदानी से फरमायाः ''मेरा मक़सद इस सुलह से सिर्फ यह था कि तुम लोगों को क़त्ल होने से बचाऊँ''।

और इमाम हुसैन ने अपने फ़ातेहाना क़याम की पहचान भी अपने ज़ाती इक़दाम से नहीं की थी बल्कि फरमायाः ''मुझे ख़ुदा क़त्ल किया हुआ देखना चाहता है'' यानी आप साफ कर रहे थे कि मैंने इन्हेराफों के मुक़ाबले में यह क़याम जिसमें मेरी शहादत हुई है अपने ज़ाती इक़दाम और अपनी शख़्सी फ़िक्र की बुनियाद पर नहीं की बल्कि यह सिर्फ ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ था जिसे मैंने अन्जाम दिया है।

और इमाम सज्जाद अली बिन हुसैन (अ0) से जब इबाद अलबसरी ने मक्का के रास्ते में कहाः आपने जिहाद और उसकी सख़्तियों को छोड़ दिया और हज और उसकी आसानियों के लिये जा रहे हैं जबकि ''अल्लाह मोमिनों से उनकी जानों और मालों को ख़रीद लेता है''। तो

(शेष..........पृष्ठ 14 पर)

अपनी महफिलों, मज्लिसों, घरों, अज़ीज़ों, दोस्तों में करते हैं लेकिन किसी मोमिना के पेवन्द वाले कपड़ों को देखकर हमारी निगाहों में उसकी इज़्ज़त कम हो जाती है। हम उसका मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं। सामने न सही तो पीठ पीछे जो कुछ जी में आता है कह गुज़रते हैं। यह नहीं सोचते कि अगर पेवन्द लगाकर पहनना या परेशानी और तकलीफ में ज़िन्दगी गुज़ारना हमारे यहाँ शर्म की निशानी और बेइज़्ज़ती व मज़ाक है तो हमारे इस निशानी बनाने से मासूम–ए–कौनैन (स0) का क्या दर्जा रह जाता है।

इसलिए हम को ऐसी बातों से बचना चाहिए और उन मौक़ों पर जिनमें मासूम–ए–कौनैन के तज़करें होते हैं उनकी अमली ज़िन्दगी को बयान करके अपनी बहू, बेटियों को उनके अपनाने का सबक़ पढ़ना चाहिए ताकि अच्छे अख़लाक़, रवादारी, इन्साफ, हक़ बात कहना, हमदर्दी, बर्दाश्त और ईसार पैदा हो और हम मेहनत मज़दूरी और परेशानी से मुहब्बत करके सही मानों में मासूम–ए–कौनैन की पैरवी करने वाली कहलाएँ। मैं सही अर्ज़ करती हूँ कि हमारे लिये यही तरीक़ा बरकत व कामियाबी वाला है और हम इसको अपनाकर दीन व दुनियामें बुलन्द होंगे वरना ऐसे दौर में जब कि मग़रिबी ज़हरीली हवाएँ बहुत ही तेज़ी के साथ क़ौमियत व मज़हबियत को ज़हर से भरती जा रही हैं इस तरह रुख़ करने से हमारी इज़्ज़त, हमारी अज़मत, हमारी पाकदामनी, हमारी इस्मत, हमारा दीन, हमारा मज़हब परेशानी में पड़ जायेगा क्योंकि हमारे बच्चे हमारी इस रोज़ाना नये रंग में बदलने वाली हालत से सबक़ लेकर बहुत जल्द किसी दूसरे रंग में रंग उठेंगे जिसमें दुनिया व आख़िरत दोनों में नुक़सान उठाएँगे। □□□

शेष....इमामे सज्जाद (अ0) की समाजी शख़्सितय

इमाम (अ0) ने अपने इरादे की वज़ाहत करते हुए फरमायाः आयत का इसके बाद का हिस्सा पढ़ो जिसमें मोमिनों की ख़ूबियाँ बयान हैं। ''यह लोग तौबा करने वाले, इबादत अन्जाम देने वाले, ख़ुदा की तारीफ करने वाले, ख़ुदा के रास्ते में सफर करने वाले, रुकू करने वाले, सिजदा करने वाले, नेकियों का हुक्म देने वाले, बुराईयों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों की हिफाज़त करने वाले हैं, ऐ पैग़म्बर (स0) आप इन्हें जन्नत की खुशख़बरी दे दें'' फिर फरमाया ''अगर इन ख़ूबियों वाले मोमिन हों तो हम जिहाद को किसी चीज़ पर तरजीह नहीं देंगे।

इस जवाब में इमाम सज्जाद (अ0) ने अपनी सियासत, अपना अन्दाज़ और अपने दौर के सुधार की कोशिश के तरीक़े को बिलकुल साफ कर दिया। और उन वजहों को भी बता दिया जिनकी बुनियाद पर इमाम को वह तरीक़ा इख़्तियार करना पड़ा था। बस इमाम सज्जाद का क़याम न करना और उमवी हुकूमत से जंग न करना इस वजह से न था कि आप दुनियावी आराम चाहते थे। जैसा कि इबाद अलबसरी के सवाल से ज़ाहिर होता है। बल्कि इमाम (अ0)का यह इक़दाम सिर्फ इसलिए था कि आप यक़ीनी तौर पर यह जानते थे कि जंग में जीत का कोई सवाल नहीं, बल्कि इन हालात में वक़्त के हाकिम के ख़िलाफ कोई इक़दाम भी इसके बिलकुल उलट (शर्म और हार) होगा। और इसी वजह से इमाम (अ0) ने इन हालात में उम्मत के सुधार का एक नया तरीक़ा अपनाया जिसके गोशों की तरफ हम आगे इशारा करेंगे। □□□